इलेक्ट्रॉनिक गजेट्स व इंटरनेट का मूल्यबोध पर प्रभाव

21 वीं सदी में हमारे सामाजिक वातावरण में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है । हमारी संस्कृति और दैनिक जीवन पर तकनीकी,संचार-माध्यमों एवं मीडिया का व्यापक प्रभाव पड़ा है। किन्तु, दुर्भाग्य से, इलेक्ट्रॉनिक मास मीडिया का विशेष रूप से बच्चों के ऊपर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है।अब यह बात नहीं है कि बच्चे जब सड़क पर निकलते हैं तो बुरे इलाकों में या बुरे दोस्त या खराब चीजों के संपर्क में आने की संभावना रहती हैं,बल्कि ईलेक्ट्रानिक गैजेट्स (टी.वी.,मोबाइल),इंटरनेट, मीडिया के रूप में एक आभासी खराब सड़क अधिकांश बच्चों एवं युवाओं के लिए अब बहुत आसानी से घरों सें ही उपलब्ध है।

गैजेट आई.सी.टी. का एक हिस्सा है जिसका ज्यादातर प्रयोग किया जाता है।बच्चों पर गैजेट के उपयोग का एक प्रभाव,उनका सामाजिक जीवन से कट जाना और उनमें भावनात्मक प्रबंधन की कमी है।यह बातचीत और संवादहीनता के कारण होता है।ऐसी स्थिति में बच्चे अपने आप तक सीमित हो जाते है तथा उनमें धैर्य का अभाव हो जाता है,उनमें आपसी संवाद करने की कला खत्म हो जाती है,जिससे वे प्रकृति एवं वातावरण से बिल्कुल अलग-थलग पड़ जाते है।समस्या तब आती है जब कुछ माता-पिता गर्व करते हैं कि उनके पास अपने बच्चों के लिए महंगा और उच्चकोटि का गैजेट है।इस समस्या का अध्ययन करने की आवश्यकता है क्योंकि आजकल बहुत से बच्चे अपने साथियों और पड़ोसियों के साथ खेलने की तुलना में गैजेट के साथ खेलने में अधिक समय व्यतीत करते हैं।जब कि अपने साथियों और पड़ोसियों के साथ खेलने से उनमें समाजीकरण और भावनात्मक संतुलन के कौशल का विकास होता है। माता-पिता को विभिन्न प्रकार के गैजेट के हानि-लाभ पर विचार करके ही बड़े सावधानी के साथ बच्चे को उनके विकास में उपयोगी साधन गैजेट आदि देनी चाहिए।क्योंकि बच्चे की जरूरतों को समझना माता-पिता की सबसे बड़ी और अहम जिम्मेदारी है। आईपैड, टैबलेट और अन्य उपकरणों के उपयोग की लत बच्चों में बहुत व्यापक है और वैश्वीकरण के युग में अपने बच्चों को शिक्षित

करना, यह माता-पिता द्वारा सामना की जाने वाली मुख्य चुनौती तथा चिंता का विषय है।

रेडियो, टेलीविजन (टीवी), फिल्में, वीडियो गेम, सेल फोन और कंप्यूटर नेटवर्क ने हमारे बच्चों के दैनिक जीवन में केंद्रीय भूमिका निभाई है। बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और व्यवहारिक विकास पर, मीडिया ने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों संभावित प्रभावों का प्रदर्शन किया है। मीडिया के नए रूपों के लिए बच्चों के बढ़ते प्रदर्शन को देखते हुए, यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि मीडिया का बाल स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसमें हिंसा, मोटापा, तंबाकू और शराब का उपयोग और जोखिम भरा यौन व्यवहार शामिल है। इसके साथ ही, मीडिया का बाल स्वास्थ्य पर कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। हमें अपने समाज में मीडिया की भूमिका को सन्तुलित करने, उनके सकारात्मक गुणों का लाभ उठाने और उनके नकारात्मक को कम करने के तरीके खोजने की आवश्यकता है। हमें बेहतर तरीके से समझने की जरूरत है कि मीडिया के नकारात्मक प्रभाव से बच्चों को कैसे बचाया जाए तथा इसे और अधिक सकारात्मक बनाया जाए। मीडिया कहते सुनते ही हमारे सामने सबसे पहले समाचार पत्र पत्रिका, रेडियो एवं टेलीविजन जैसे सूचना संसाधन दृष्टिगोचर होने लगते हैं। जहां पहले सूचना को भेजने तथा प्राप्त करने के लिए मनुष्य को स्वयं जाना पड़ता था या हमें जानवरों का सहारा

लेना पड़ता था जिसमें सूचना को उसके गंतव्य स्थान तक पहुंचाने में अधिक समय लगता था। समय के साथ प्रारंभ में धीरे-धीरे परंतु बाद में तेजी से सूचना माध्यमों का विकास हुआ जिसमें सूचना को बड़े माध्यम के रूप में हमारे सामने अति विस्तृत रूप से तथा कम लागत मूल्य में समाचार पत्र तथा पत्रिका ने जगह दी। इसके साथ ही वर्तमान में विश्व भर में सूचना के इतने संसाधन कम लागत मूल्य पर उपलब्ध हैं जिनसे पलक झपकते ही विश्व भर की आवश्यकता अनुसार सारी सूचनाएं प्राप्त की जा सकती है। बच्चों में सामाजिक चेतना जागृत करने हेतु मीडिया सबसे महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य कर रहा है। यह अपनी प्रभावी प्रस्तुतियों के माध्यम से बच्चों को न सिर्फ दिशा देता है बल्कि दिशा निर्देशों के माध्यम से स्वयं को संचालित करने के लिए प्रेरित भी करता है। इसके माध्यम से ही बच्चे आज हमारी संस्कृति से इतने परिचित हुए हैं कि वह भारतवर्ष की हर चीज को जानने के लिए उत्सुक है। वे यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि वे इससे भी अधिक पूरे विश्व को जानना चाहते हैं तथा जानते भी हैं। उनमें हर विषय के प्रति उत्सुकता बढ़ी है तथा हर विषय को जानना चाहते हैं, उनमें नए-नए प्रयोग कर विश्व में उपलब्धि हासिल करना चाहते हैं, उन्हें दूसरों से तो छोड़िए स्वयं से प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, वे नित्य नया करना चाहते हैं। वे तकनीकी कौशल में माहिर हो रहे हैं। वर्तमान में बच्चों की प्रतिभाएं मीडिया के बदौलत और निखर कर सामने आयी हैं जिसमें सबसे बड़ा सहयोग विभिन्न चैनल पर प्रसारित होने वाले रियलिटी शो का है इसने शहरों के साथ-साथ गांव के बच्चों का कौशल बढ़ाया भी है। आज बच्चे मीडिया के उपयोग के कारण किसी के ऊपर निर्भर नहीं है । यह अपनी आवश्यकता की सामग्री इसके माध्यम से प्राप्त कर लेते हैं। कार्टून की दुनिया इन्हें अपनी कल्पना की दुनिया से परे ले जाकर इनका भरपूर मनोरंजन करती है । आज बच्चे समाज में हो रही सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक गतिविधियों में भी भरपूर रुचि रखते हैं। यह सब संभव हो सका है मीडिया के कारण। एसोचैम के रिपोर्ट के अनुसार 6 से 17 साल की उम्र के बच्चे एक हफ्ते में कम से कम 35 घंटे से ज्यादा टीवी देखते हैं। ज्यादा टीवी देखने से इन बच्चों के स्वभाव में बदलाव आ रहा है। बच्चों की मनोवृत्ति बदल रही है। उनमें हिंसक प्रवृति में भी बढ़ोतरी हो रही है। अध्ययन से यह भी पता चला है कि 10 साल से कम उम्र के 4% बच्चे अपने माता-पिता से मारपीट करने से भी नहीं डरते। यदि बच्चों की कोई बात नहीं मानी जाती तो वे अपने माता-पिता के प्रति बहुत उग्र एवं हिंसक हो जाते है।

दिल्ली साइक्रिएटिक सेंटर डीपीसी के निदेशक एवं वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉक्टर सुनील मित्तल बताते हैं कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अधिक समय रहने के अलावा अधिक

समय तक टेलीविजन देखना बच्चों किशोरों एवं युवाओं में डिप्रेशन झुंझलाहट एवं अनेक अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याएं पैदा करते हैं। बच्चे टीवी पर आने वाले अपने पसंदीदा कार्यक्रमों को देखने के बाद हूबहू वही करने की कोशिश करते हैं इसे भी अपने रोल मॉडल को टीवी पर करता हुआ देखते हैं वह इन कार्यक्रमों को हकीकत में देखना और जीना पसंद करते हैं। साथ ही वर्तमान में बच्चों में इस वजह से अकेले रहने की प्रवृत्ति में भी इजाफा हुआ है और विराम इसके साथ बढ़ती न्यूक्लियर फैमिलीज के कारण भी बच्चे अपने मनोरंजन के लिए किसी माध्यम पर आश्रित हैं इसके साथ ही बच्चे आउटडोर गेम खेलने के प्रति इतनी रुचि नहीं रखते इतनी की माध्यमों द्वारा वर्तमान में प्रचलित खेलने कंप्यूटर मोबाइल पर खेला जाता है उसे खेलने के प्रति रखते हैं। इससे उनके शारीरिक व मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ा है साथ ही छोटे-छोटे बच्चों में कई प्रकार की उम्र में ना होने वाली बीमारियों ने भी घुसपैठ कर ली है। वर्तमान में बच्चे अपनी उम्र से पहले परिपक्व हो रहे हैं, चाहे वह शारीरिक तौर पर हो या मानसिक तौर पर क्यों ना हो।

सोशल मीडिया के बहुत ज्यादा उपयोग करने के मनोवैज्ञानिक प्रभाव हैं। यह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हैं। सोशल मीडिया के बहुत ज्यादा उपयोग करने से बच्चों के मन में जीवन के प्रति असन्तुष्टि की भावना ज्यादा रहती है।वे अपने अभिभावकों से अवांछित वस्तु की मांग भी करने लगते हैं।

टेलीविज़न हमारे घरों में सबसे नई तकनीक थी, और फिर वीडियो और कंप्यूटर आए। आज के बच्चे बढ़ रहे हैं तेजी से बदलते डिजिटल युग में जो अपने माता-पिता और दादा-दादी से बहुत अलग है। हमारे घरों, कार्यालयों और स्कूलों में हमारे चारों ओर विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकियाँ हैं। । तकनीकी और मीडिया का सीखने और सिखाने की प्रक्रिया के साथ गहरा सम्बन्ध हैं। इनके द्वारा साझा किए गए सुखद और आकर्षक अनुभव, बच्चों के सीखने और विकास करने की क्षमता में वृद्धि करते हैं। अनुसंधान हमे इस बारे में बताते हैं कि छोटे बच्चे कैसे बढ़ते हैं, सीखते हैं, खेलते हैं, और विकसित होते हैं। सीखने के सिद्धांतों को लागू करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों और मीडिया का उपयोग एक क्रान्तिकारी प्रयोग हो सकता है । बच्चों के अधिगम के लिए तकनीकी,मीडिया एवं इलेक्ट्रानिक संसाधनों के एकसाथ प्रयोग का कार्यक्रम आकर्षक एवं ठोस विकासात्मक नींव पर बनाया जाना चाहिए। बचपन में शिक्षण-प्रक्रिया की चुनौतियों और अवसरों को पहचानने वाले कुशल शिक्षकों को हर बच्चे के लाभ के लिए प्रौद्योगिकी और मीडिया का उपयोग शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए हरसम्भव प्रयास करना चाहिए ।सबसे अच्छा उदाहरण अरुशी

हत्या का मामला है जो लगभग सभी भारतीय समाचार चैनलों में एक साथ बहुत दिनों के तक दिखाया गया था, जबकि सड़क पर जीने वाले बच्चों की दुर्दशा को बिल्कुल भी नहीं दिखाया जाता है।

मीडिया और बच्चे

इलेक्ट्रानिक वस्तुएं(टीवी आदि), मास मीडिया, बच्चों के मूल्य विकास पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव डालते है। ऐसे जनसंचार माध्यमों में सबसे महत्वपूर्ण टेलीविजन है। मीडिया के उपयोग की मात्रा बच्चे के हितों के साथ बदलती है, टीवी देखने में बिताए समय की मात्रा जो कि बच्चे के मूल्य अवधारणाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। टेलीविजन बच्चों के जीवन में सबसे अधिक प्रचलित मीडिया प्रभावों में से एक है। टीवी देखना भारत में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक बच्चों के लिए एक दैनिक शगल है जो लड़कों और लड़कियों दोनों के बीच है। बच्चों पर टीवी का कितना प्रभाव पड़ता है।यह कई कारकों पर निर्भर करता है,जैसे- उनकी उम्र और व्यक्तित्व, चाहे वे अकेले या वयस्कों के साथ देखते हैं और क्या उनके मातापिता - उनके साथ इस बारे में बात करते हैं कि वे टीवी पर क्या देखते हैं। पिछले दो दशकों में, सैकड़ों अध्ययनों ने जांच की है कि टीवी पर हिंसक कार्यक्रम बच्चों और युवाओं को कैसे प्रभावित करती है। एक आम सहमति है कि कुछ बच्चे हिंसक दृश्यों और संदेशों के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) में 80% से अधिक किशोर, जो नई मीडिया प्रौद्योगिकी के कम से कम एक प्रकार (*जैसे* ,सेल फोन, व्यक्तिगत डेटा कार्य के लिए कंप्यूटर, इंटरनेट) और सामाजिक नेटवर्किंग वेबसाइटों के उपयोग में तकनीक का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। । एक राष्ट्रीय कैसर परिवार फाउंडेशन (यूएस) सर्वेक्षण में पाया गया कि 8 से 18 वर्ष की आयु के बच्चे प्रतिदिन औसत 6 घंटे,21 मिनट तक मीडिया का उपयोग कर लेते हैं । अधिकांश बच्चों ने केवल सोने के समय को छोड़कर मीडिया के साथ गतिविधियों में ही ज्यादा समय बिताए। हालांकि भारत से यह डेटा सीमित है,पर ध्यान देने की बात है कि हमारे बच्चे भी करीब 2 घंटे प्रतिदिन टीवी देख लेते

है।

जनसंचार माध्यमों के प्रभाव दूरगामी पाए गए हैं , जो बच्चों और किशोरों के स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। खासकर जिनमें से कई बच्चों के दिमाग अभी तक यथार्थ से कल्पना को अलग करने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व नहीं हैं, जब इसे "वास्तविक जीवन" के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह बहुत छोटे बच्चों के लिए विशेष रूप से ध्यान देने की बात है, जिनकी दुनिया और कल्पना के दायरे सीमित हैं,जिनके लिए काल्पनिक संसार ही वास्तविक हैं। इसके अलावा, ईलेक्ट्रानिक गजट, सोशल मीडिया,इंटरनेट के साथ अधिक समय बिताने से, खेल, शारीरिक गतिविधि, सामुदायिक सेवा, सांस्कृतिक गतिविधियों, और परिवार के साथ समय, जैसे अन्य अधिक स्वस्थ गतिविधियों के लिए समय पर्याप्त नहीं बचता है।

इलेक्ट्रानिक गजेट्स,मीडिया,इंटरनेट का बच्चो के व्यवहार पर प्रभाव

बच्चे, मीडिया या अपने आस-पास के वातावरण में या दूसरे लोगों के द्वारा प्रदर्शित आक्रामक व्यवहारों, (*जैसे* मारपीट आदि) का जो निरीक्षण करते हैं, वैसे ही विशिष्ट आक्रामक व्यवहार उनमें भी करने की संभावना अधिक रहती है । मीडिया हिंसा के प्रभाव का परिणाम बच्चों में आक्रामक व्यवहार, विचार, उत्तेजना, और क्रोध के रूप में दिखाई पडती है। इसके अतिरिक्त, यह महत्वपूर्ण बात है कि हिंसा के संपर्क से बच्चों के मूल्यबोध पर नकारात्मक प्रभाव पडता है। । निस्संकोच एक्सपोज़र है स्थायी परिणाम उत्पन्न करने की संभावना नहीं है, लेकिन माता-पिता को ईलेक्ट्रानिक मीडिया, टेलीविजन,इंटरनेट, मोबाइल आदि से होनेवाले दुष्प्रभाव व उनसे सुरक्षित रहने के बारे में विशेष रूप से अपने बच्चों को बारबार समझाने की आवश्यकता है, जिनके बच्चे हिंसक वीडियो गेम के साथ अत्यधिक खेलते हैं या हिंसक टीवी कार्यक्रमों में सदा व्यस्त रहते हैं।

मीडिया के माध्यम से हिंसा के संपर्क में आने वाले बच्चों का विद्यालय में प्रदर्शन खराब रहा है। और उनके मनोसामाजिक समायोजन पर इसका बेहद हानिकारक प्रभाव पडता है। भारत के एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि मीडिया द्वारा आतंकवादी

हमलों एवं दंगों के माध्यम से हिंसा के ज्वलंत प्रसारण किशोरों में तनाव के कारण बनते हैं। हत्या-रहस्य वाली फिल्मों एवं हिंसा और यातनाओं से भरी कहानियों के दृश्य टीवी,मोबाइल,कम्प्यूटर,टैब आदि पर लगातार और नियमित रूप से देखने के कारण बच्चों में भय, तनाव, बुरे सपने और अपराध के प्रति झुकाव बडी तेजी से बढ रहा है।

भारत में टीवी देखने और आत्महत्या करने के बीच गहरे संबंध की बात भी सामने आयी है।

टेलीविज़न और सामाजिक अलगाव

बिकाम, एट अल ने टीवी देखने के समय, सामग्री, संदर्भ और सथियों के बीच संबंधों की जांच किया । बच्चे टीवी देखने में अधिक समय बिताने के कारण, वे दोस्तों के साथ में काफी कम समय बिताते हैं। इस प्रकार, टेलीविजन देखने से साथियों से रिश्ते खराब हो जाते हैं, और जिससे बच्चों में आक्रामकता, सामाजिक अलगाव, चिंता, एगोराफोबिया और असामाजिक व्यवहार का जोखिम बढ़ जाता है। कुछ लेखकों ने पाया कि बच्चे जितना अधिक समय टीवी देखने में बिताते हैं, उतना कम समय वे अपने परिवार के साथ बिताते हैं। बच्चे मनोरंजन और साहचर्य के लिए टीवी की ओर रुख कर सकते हैं। जो बच्चे अपने साथियों से अलग-थलग रहते हैं, वे अपने जीवन के तनाव से बचने और अपनी सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के लिए टीवी का उपयोग करते हैं। इसके विपरीत, जो बच्चे सामाजिक रूप से एकीकृत होते हैं, वे टीवी देखने में कम समय बिताते हैं । इस प्रकार, यह तर्क दिया जा सकता है कि यह सामाजिक अलगाव है जो अत्यधिक मीडिया के उपयोग को प्रेरित करता है।

हिंसक टेलीविजन देखने से छोटे बच्चे अधिक असामाजिक हो सकते हैं; सामाजिक रूप से अलग-थलग होने के परिणामस्वरूप, जो उन्हें और अधिक हिंसक मीडिया के लिए आकर्षित करता है। बच्चों के सामाजिक विकास और दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य का अनुकूलन करने के लिए, माता-पिता, शिक्षकों और बाल रोग विशेषज्ञों को हिंसक टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने के लिए उन्हें हतोत्साहित करना चाहिए।

ईलेक्ट्रानिक मीडिया और बच्चों में मोटापा

डाइट्ज़ और गोर्मेकर ने बताया कि प्रति सप्ताह टीवी देखने के प्रत्येक अतिरिक्त घंटे ने मोटापे के जोखिम को 2% बढ़ा दिया है। रॉबिन्सन द्वारा किए गए प्रयोगात्मक अध्ययन में टीवी देखने और बच्चों के अधिक वजन के बीच सम्बन्ध के मजबूत सबूत मिले हैं। भारत के विषय में भी, इस पर जोर दिया गया है ।
स्टेपलर ने इलेक्ट्रॉनिक गेम के उपयोग और मोटापे के बीच एक महत्वपूर्ण जुड़ाव दिखाया, साथ ही रोजाना इलेक्ट्रॉनिक गेम खेलने में बिताए गए हर घंटे के लिए मोटापा का खतरा लगभग 2 गुना बढ़ गया।

प्रिंट मीडिया एक अनुचित रूप से पतली शरीर का आदर्श, को बढ़ावा देता है,जो खाने के विकारों को बढ़ावा देने के लिए कहीं न कहीं जिम्मेदार है। एक पतले आदर्श-प्रचारक मीडिया के उपयोग का भावी अध्ययन युवा किशोर लड़कियों में पाया गया ।

धुम्रपान

अनुसंधानों में कुछ बड़े मीडिया संदेशों एवं किशोरों में धूम्रपान की लत के बीच एक मजबूत संबंध की बात सामने आयी है। उदाहरण के लिए, आधे से अधिक किशोर बच्चों में धूम्रपान की शुरुआत फिल्मों में धूम्रपान के दृश्य देखने से सम्बन्धित हैं।बच्चों के दृष्टिकोण और व्यवहार पर मास मीडिया के प्रभाव को देखते हुए, मीडिया साक्षरता उन्हे विज्ञापन और अन्य मास मीडिया संदेशों को समझने, उनका विश्लेषण और मूल्यांकन करने के लिए सिखा सकती है, जिससे वे मीडिया संदेशों को सक्रिय रूप से संसाधित करने में सक्षम हो सकते हैं। भारत में फिल्में और टेलीविजन कार्यक्रम ऑन-स्क्रीन धूम्रपान पर प्रतिबंध के साथ काफी विवादों का सामना करना पड़ा। आमतौर पर, 1 जनवरी, 2006 से प्रतिबंध लगाया गया था और फिर 23 जनवरी, 2009 को दिल्ली उच्च न्यायालय ने फिल्मों और टीवी में धूम्रपान प्रतिबंध हटा दिया।

मीडिया एवं शराबपान

1990 के एक अध्ययन में, 5 से 12 वीं कक्षा के 56% छात्रों ने कहा कि शराब के विज्ञापन उन्हें पीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। निष्कर्षों से पता चला है कि 18 साल

की उम्र में ज्यादा टीवी देखने की अपेक्षा जिन लड़कियों ने 13 और 15 साल की उम्र में अधिक टीवी देखा था, उन लोगों ने में ज्यादा शराब पी थी।

इलेक्ट्रानिक गजेट्स व इंटरनेट के दुष्प्रभाव से मूल्यबोध की रक्षा कैसे

सबसे पहले, मीडिया द्वारा स्वयं को अनुशासित करते हुए, केवल आर्थिक प्रयासों की एक श्रृंखला बनने के बजाय सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं समाजिक मुद्दों पर सकारात्मक रूप से उसे अपने को प्रदर्शित करने की आवश्यकता है, क्योंकि वे बच्चों पर सबसे गहरा प्रभाव डालते हैं। यह हिंसा, मोटापा, तंबाकू और शराब के उपयोग, और जोखिम भरे यौन व्यवहारों सहित कई अन्य मुद्दों के साथ बच्चे के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।टेलीविजन और अन्य मीडिया को बुराई या मनोरंजन के मात्र साधन के रूप में न देखकर और दूसरे दृष्टिकोण से भी देखा जाना चाहिए,क्यों कि इसमें हमारे बच्चों के मूल्यों को समृद्ध करने, उनकी प्रतिभा को तलाशने,और तरासने की भी क्षमता है । इस तरह के त्रासदी को कैसे रोका जाए, इसके लिए यह जवाबदेही तय करने की आवश्यकता है कि जो भी आवश्यक सूचनाओं का संचार करेगा,वह बच्चों के विकासशील दिमागों पर हानिकारक प्रभावों को कम करने वाले सूचनाओं का ही प्रसार करेगा ।इस प्रकार, हमें अपने समाज में मीडिया की भूमिका का नियमन करने , उनकी सकारात्मक विशेषताओं का लाभ उठाने और उनके नकारात्मक प्रभाव को कम करने के तरीके खोजने की आवश्यकता है।मीडिया को सकारात्मक संदेश देने वाले कार्यक्रम,जैसे- अधिक टीवी ,हिंसा व डरावनी फिल्मों को देखने, मोबाईल,वीडियो गेम्स, इंटरनेट आदि के सकारात्मक एवं नकारात्क प्रभाव , बचपन में मोटापे के दुष्प्रभाव, पूर्व-किशोरावस्था व किशोरावस्था वाले बच्चों में शारीरिक,मानसिक और व्यवहारिक परिवर्तन हो तो कैसे व्यवहार करें, किशोर बच्चे की यौन- संवेदनशीलता पर ध्यान, तंबाकू विरोधी संदेश आदि के बारे में चर्चा तथा इनसे सम्बन्धित सूचनाओं का प्रचार-प्रसार और जन-जागरण करना चाहिए। भारत में, विशेष रूप से मीडिया के प्रभाव पर सीमित अध्ययन हैं।

माता-पिता टेलीविजन देखने से बच्चों के ऊपर होने वाले दुष्प्रभाव पर अंकुश लगाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।बच्चों के साथ टेलीविजन देखने वाले माता-पिता इसे क्रियात्मक, सीखने की प्रक्रिया से युक्त तथा मुल्यबोधपरक बना सकते हैं। माता-पिता के द्वारा टीवी,मोबाईल आदि इलेक्ट्रानिक गजेट्स के अत्यधिक प्रयोग से होने वाले हानि के बारे में बार-बार चर्चा करने से बच्चों के इन वस्तुओं के प्रयोग में भारी

कमी आ सकती है, क्यों कि अध्ययन ये भी बताते हैं कि माता-पिता के अनुशासन से युक्त व्यवहार ने बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि को काफी प्रभावित किया। इसलिए, माता-पिता को मीडिया के नकारात्मक प्रभावों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, जिससे उनमें यह आत्मविश्वास आ जाए कि वे घर के भीतर बदलाव कर की सकते हैं। इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स ,शिक्षा मंत्रालय,सूचना – प्रसारण मंत्रालय तथा शिक्षाविदों को, माता-पिता और बच्चों स्वस्थ मीडिया के उपयोग की आदतों को विकसित करने में मदद करने के लिए आगे आना चाहिए और दिशानिर्देश तैयार करके,उसे लागू करना चाहिए।

देवेन्द्र कुमार दुबे
राज्य हिंदी संस्थान ,वाराणसी